

स्पन्दन

भास कोंकणी आवसु आमची। लिपि देवनागरी उडगासु दवराची।।

Date of Publication : 1-5-2014



केरळ कोंकणी अकादमी
कोच्ची

रुपया पाँच मात्र

Vanitha™
AYUR





Slim Tone
Shape Up Naturally

NO food control
exercise
side effects

- Eliminate bulk and unwanted obesity
- Reduce conversion of carbohydrates to fats
- Prevent oxidation of lipids by free-radicals
- Improve your functions
- Designed for long-term therapy





HERBAGRA
Herbal Energy Capsule

- Streamline premature ejaculations
- Rejuvenate the body by producing extra energy
- Corrects seminal debility and low sperm count
- Natural and effective formula
- Meant for long-term therapy

EXPORT ENQUIRES WELCOME

ALL NATURAL ACTIVE INGREDIENTS
ECO-FRIENDLY PROCESS ARE USED IN MANUFACTUARING





Mfd by:
AYUR RESEARCH CENTRE
ISO & GMP Certified Company





Tripunithura - 682 306, Kerala, Ph: +91 484 3931281, 3931282, 2785023
Email: vanithaayurvedics@vsnl.net www.vanithaayurresearch.com

मुखेल संपादक
सुरेश ए. शेणै
उप संपादक
पी. मनोहर
कोशाधिकारि
आर. के. प्रकाश
वाँगडी
जी. मोहन राव
न्यायोपदेशक
अड.वी.एन. वसन्त कुमार
प्रचार-प्रसार
टी. आर. सदानन्द भट

Graphics by :
K. Santhosh
Mob : 9895212521

मुखचित्र : कोच्चीन्तुले उक्कुलीक प्रच्छत्रवेष मत्सरा खातीर केल्लेले "भंगारा पल्लेके" चे प्रतिरुप (Replica)। तज्जे निर्माण चातुरी, आकर्षण सग प्रशंसनीय। हाजे कलाकार 'वैष्णवास' हांका अभिनन्दन।

लेखनान्तुली मतां त्या त्या बरोवप्याचीं

प्रति - ₹ 5/-
वार्षीक - ₹ 60/-

स्पन्दन

प्रकाशन : केरळ कोंकणी अकादमी, कोच्ची



SPANDAN
Published by :
KERALA KONKANI ACADEMY
8/28, 'Santhery', 1st Floor,
Opp. M.S.C. Bank Ltd., Cherlai Road,
Cochin - 682 002. Mobile : 94477 35849
Email : keralakonkaniacademy@gmail.com

खंड : 3 अंक : 5 1936 वैशाख

संपादकीय

आमी ऊणे काळ फूडे ह्यो विषयु चर्चा केल्लोलो त। 'होर्तूस इंडिकूस मलबारिकूस' ग्रन्थाचे आधिकारिकता पठन कोर्नु ते विषयान्तु कोंकणी भाषेन्तु प्रमाण पत्र दिल्लेले आप्पु भट्ट, रंग भट्ट, विनायक पंडिट हांकां, तांगेले वासस्थल समजूनु, गोश्रीपुरान्तु उचित स्मारक कोरका म्हणु अमी तेद्दूस अभिप्रायु संगिलो तं। कसलेंय जावो, आजी अनुग्रहा चारिटबल ट्रस्टाचे आभिमुख्यारि केरळ कोंकणी अकादमी, जी. एस. बी. बैंक स्टाफ असोसियेषन, गौड सारस्वत असोसियेषन आदी संस्थो एकडे जावनु ह्ये बगेक (एक स्मारक कोरका म्हणु) कळोलो निर्णयु स्वागतार्ह आसा। सभेन्तु आसिले कोच्ची तिरुमल देवस्वम मानेजिंग अधिकारि आनी कम्मिटी मेम्बर हात्री टी.डी. देवस्थाना लागी शिलेरि हांगेले रेखा चित्र, हांगेले प्रमाण पत्र सहित प्रदर्शन करपाक, स्थायाचो व्यवस्था करताय म्हणूय वाग्दान केल्लें।

ह्यें तय्यार कोरनु जांवचे इत्तुले धरारि प्रावर्तिक कोर्का म्हणु आमी अपेक्षा करतायि। मात्र न्हय तांगेले छायाचित्र आसिल्या लागी सान तणाचे आराम कोरनु, तें संरक्षण करपाक आसीली व्यवस्थायि कोरका। प्रमाण पत्राचि आंगल/ मलयाळम भाशेन अणकार लागेन आसा जाल्यार मस्त देश-विदेशी टूरिस्टांकय समजूचाक जातलें।

हाजे भायर, कोंकणी उल्लोंवचे पूरा जनांकय हान्तु वांटो दिवपाक प्रयत्नु काडतले/ काडका म्हणु विनन्ती करताय।

कोच्ची, 01-05-2014 सुरेश ए. शेणै, मुखेल संपादक.



06-03-2014 :- कर्णाटक कोंकणी साहित्य अकादमीचो नवे अध्यक्ष जल्ले **रोय कासलिनो**। (समके नांव रोनाळ्ड एस. ए. कासलिनो) ते कोंकणी प्रचार संचालन म्हळेले संस्थेचे अध्यक्ष लगेन त।



विवेकानन्द शेणै हांका 'The Risk Manager of the Year 2013' म्होणु पुरस्कृत केल्या। ET Now TV Channel अनि ICICI Lombard General Insurance Company Ltd. हांगेले संयुक्त आभिमुख्यार मुम्बै दवोर्नु 13-3-2014 चम्कीले 'The Maiden India Risk Manager Awards' कार्यक्रमान्तु त पुरस्कारु दिल्लोलो। हान्नी Muthoot Pappachan Group हांगा Senior Vice President जाव्नु तिरुवनन्तपुरम आस्साय।



29-3-2014, मणिपाल - 'Dr. T.M.A. Pai Best Konkani Book Award 2012' क **सूर्या अशोक** (पळ्ळूर, केरळ) हांगेले **"अनन्य केनिया"** म्हळेले पुस्तक वेंचून काळ्या।



भारतियार सर्वकलाशालेचे एम.कोम (CS with CA) परिक्षेन्तु प्रथम रांक प्राप्त केल्लेली **एस. संगीता**, चोट्टानिक्करा श्रीनिलयं राकेष शेणै हांगेलि धर्मपत्नि।

कोच्चीचे गोश्री कलामन्दिर हान्नि **"उठरे कृष्णा"** म्हळेले कोंकणी लोक गीत/ पारम्पर्य गीतांचि CD देवेयली। हान्तु 1) उठरे कृष्णा 2) बाळा जो जो रे 3) श्रीलक्ष्मीरमणाक 4) राम बाळा जो - अस्सी चारि गीन्त अस्सय। गीन्त म्हळेले - श्वेता पी. भट, प्रीति रावु, सन्ध्या बाबुराज, लक्ष्मीप्रिया एस. पै अनि सुप्रभा के. भट।

पळूरुत्ति, 20-4-2014 - पत्तुं तिरुमल श्री वेंकटेश्वर शताब्दी हाळान्तु दवोर्नु चमकीले **"वैष्णवरत्न"** मासिकेचे 15-वे वार्षिकोत्सव अनुबन्ध जाव्नु बहुमति, कोंकणी साहित्य-युवजन-कलाप्रतिभा-विद्यार्थी इत्यादि पुरस्कार वितरण केल्लें। प्रमुख व्यक्तियानि हान्तु भागु घेत्तलो। पुस्तकांचे विमोचनय अस्सिलें।

24-4-2014 : कोच्ची योग्य पै नारायण पै ट्रस्ट हांगा दवोर्नु स्मृति दिनाघोषु चम्कीलो। **"होर्तुस इन्डिकूस मलबारिकूस"** म्हळेले सस्य ग्रंथाक अमूल्य सहयोग दिल्लेले आपु भट, रंग भट अनि विनायक पंडित हानि साक्ष्य पत्र दिल्लेले ह्यो दीसु 1597 राक्षस संवत्सर चैत्र बहुळ 10 तं। ते उडगासाक तं ह्यो दीसु **'स्मृति दिवसु'** जाव्नु आघोषु केल्या।

।। मातृ पञ्चकम् ।।

(श्रीशङ्कराचार्यविरचितं) **(कोंकणी विवर्तन)**

- माया जी. कम्मत, कोच्ची

आस्तां तावदियं प्रसूतिसमये दुर्वारशूलव्यथा
नैरुच्यं तनुशोषणं मलमयी शय्या च सांवत्सरी।
एकस्यापि न गर्भभार भरणक्लेशस्य यस्यक्षमः
दातुं निष्कृतिमुन्नतो/पि तनयस्तस्यै
जनन्यै नमः।।1।।

मक्का जन्मु दिंव्चे वेळारि असह्य जाव्नसिल्ले कष्ट तूंवें सहन केल्ले। तशीचि हांव गर्भान्तु असिल्ले त्या णव मासांक तुग्गेले शरीर सुकलें आनि दुक्कीयि तूंवे संहन केल्ली। एक वर्ष पर्यन्त तुग्गेली शय्या हांवे वायट केल्ली। आज हांव उत्तलोची प्रशस्त जल्लो जल्यारीयि हज्जे सग्ग बदलाक मक्का कांयि तुक्का दिंव्चा जल्लेना। तसले हे आवसु, हांव तुक्का केवल नमस्कारु करता।

गुरुकुलमुपसृत्य स्वप्नकाले तु दृष्ट्वा
यतिसमुचितवेशं प्रारुदो मां त्वमुच्चैः।
गुरुकुलमथ सर्वं प्रारुदत्ते समक्षं
सपदि चरणयोस्ते मातुरस्तु प्रणामः।।2।।

स्वप्नांतु तूँवे मक्का सन्यासिवेषान गुरुकुलान्तु पोळोव्नु होडान रव्ळेले त्या वेळारि गुरुकुलांतुली सर्वयि जन तुज्जे ओट्टु मेळनु रव्ळेलीं। आज ह्या वेळारि तुग्गेले चरणारि नमस्कारु कोरूक नन्तना विंगड कसले हांव कोरूक ?

न दत्तं मातस्ते मरणसमये तोयमपि वा
स्वधा वा नो देया मरणदिवसे श्राद्धविधिना
न जप्तो मातस्ते मरणसमये तारकमनुः
अकाले संप्राप्ते मयि कुरु दयां
मातुरतुलाम्।।3।।

मरण वेळारि हांवे उद्दाक सरि तुक्का दिल्लेना। मृत्यु पवलेले दिस्स सरि विधि प्रकार हांवे श्राद्ध केल्लेना। तूं मरण पंव्चा त्या वेळारि सरि मक्का कांयि राम नाम जपु कोर्चाक जल्लेना। आज वेळु जाव्नु (तोडोवु जाव्नु) हंगा पाविले मिज्जेरि दया कोर्नु हे आवसु, क्षम करि। इत्याक म्हळ्यारि तोडोवु जाव्नु तं हांव हंगा पावला।

मुक्तामणिः त्वं नयनं ममेति
राजेति जीवेति चिरं सुत त्वम्।
इत्युक्तवत्यास्तव वाचि मातः
ददाम्यहं तण्डुलमेव शुष्कम्।।4।।

तूं मक्का मोत्तियाँ समान, तूंचि मिग्गेलो दोळो, तूंचि मिग्गेलो राजकुमार, तूंचि मिग्गेलो जीवु, तूं मस्त वर्षांक जीवि जावो अश्शि सग्ग मक्का सांगिले हे आवसु, हज्जे बदलाक हांव ये सुक्के तन्दुल तं तुग्गेले तोणान्तु घालता।

अंबेति तातेति शिवेति तस्मिन्
प्रसूतिकाले यदवोच उच्चैः।
कृष्णेति गोविन्द हरे मुकुन्देति
अहो जनन्यै
रचितोय/मञ्जलिः।।5।।

मक्का जन्मु दिव्चें वेळारि दुक्कियेन कर्तना हे आवसु, हे बाप्पु, हे शिव, हे कृष्ण, हे गोविन्द, हे मुकुन्द, हे हरे म्हणु उळदिले हे आवसु, हज्जे बदलाक हांव तुक्का केवल नमस्कारु करता।

मनाचें पाळ -8

कृष्ण नारायण नायक, कोच्ची

"परब्रह्म रूपीणि माते"

ब्रह्माण्ड जननीक नमन। कराग्रे वसते लक्ष्मि, समुद्रवसने देवी..., नित्योदयारि आदर अर्पण। आवसूले परिचरणान्तुल्यान अक्षरलोक प्रवेश, नन्तर सरस्वति सदनान्तु। सरस्वति नमो देवी... प्रार्थना परिश्रम काय मन आत्मोन्नतीक - जन्म साफल्याक। देवीलो अनुग्रहु प्रतिपावल जायीचि। तिरुप्पति निवेद हाणु दित्तरि लक्ष्मी प्रसाद कुंकुमे पटळी आसतली-फूडे आचारु। लक्ष्मी देवळान्तुलो अर्चन वीडो हाळ्यारि, केळें कुटीके कोर्नु चेर्डुवांक, फडचान खत्तल्यांक, कुंकुमे पटळी सुमंगलीक गन्ध प्रसाद सगटांक। शुद्ध स्थल लक्ष्मीत्वा लक्षण। घर दर्ल आंगण सकाणी सांझे कोयरुनिक काणु चन्द राकतायि। भाण भोर्नु सोडतायि, स्थानावेलो दीवो दिसदीस समयारि लायतायि-लक्ष्मित्व अपौन अठौन। सन्ध्याकालाक नामजपु पारायण संकीर्तन कर्तायि-शान्ति समाधान लक्ष्य दवोर्नु। परब्रह्म रूपीणि मातेली कृपावृष्टि अनायास हस्तगत कोर्चि उपाद्यो।

सुदृढ देह, समृद्ध सौभाग्य, समुचित विद्या-सार्थक जीवनाक यें तिन्नीयि अनिवार्य। हाजी अधीश देव्यो-दुर्गा लक्ष्मी सरस्वति। परब्रह्म मातेले त्या प्रतीकांक उपासना, प्रतिवर्ष शारदोत्सवान्तु प्रत्येक। बावलीं माण्डैतासणा अष्टलक्ष्मींक एकु क्रमु आस। अहल्या द्रौपदी सीता तारा मण्डोदरी .... पंचकन्या स्मरणेन्तुलें। कुलदेवी आराधनेन्तु नवदुर्गे नांव घेत्तायि। देवी स्तवन स्तोत्र स्तुति अष्टकं... सगटांक कण्ठस्थ। अयिगिरि नन्दिनि... आयकतरीचि आनन्दनृत्य मनान्तु आरांभता। लक्ष्मीदेवी..., जगत जननी..., देवी सरस्वती..., महालक्ष्मि महामाये...., रागताळयुक्त, श्रुतिमधुर भावबद्ध उतुले गीन्त गांवगांवान्तु म्हणतायि! समाराधने पूर्व अन्नपूर्णा पूजा हृदयहारि। सावित्रि, अनसूया मैत्रेयि, गार्गि, ऋषिकुल परम्परे असंख्य मुखेलीं।

शेषशायीले विहारान्तु वुचून भृगूली क्षमाबल परीक्षा-वक्षस्थलारि मुस्तप-लक्ष्मीले आवास स्थलारि। तप्त व्यस्त लक्ष्मी वियोग। करवीरपुर प्रयाण। तुळसी वृन्दपीठेन्तु योगनिद्रे उपरान्ते जगन्नाथालें उत्थान। पद्मावति परिणय-वेंकटकल्याण जनप्रिय संकीर्तन। मूलमूर्ति सप्तगिरि शिखरान्तु। अलमेलु किलोमीटर दूरा लक्ष्मी कोविलान्तु। पुण सम्बन्धु समग्र। क्षेमकल्याण उत्तरोत्तर वृद्धि थांगा। गोश्रीश कोच्चीन्तु, महालक्ष्मी अनन्तनारायणपुरान्तु-कारण चरित्र। जन एक, मन एक एत्तायि वत्तायि, सोयरीक सिकवण व्यापारु खुशाल

चलता। दैवीक संकल्पयि सुधार्सोयि। बेसलेकडे बेसून विश्वदृश्य बोटां तलवानि, पनवळ पूरो, ऐटि महत्व। वोय्यो पागार वैराग्य अर्थशून्य। श्रीलक्ष्मी आनि नाथ रमणाक भर्सि वियोग विचार मिथ्या मरीचिके समान। मातृत्व धाम परम अलौकिक। अनुपम। दिकूनूचि त्वमेवमाताच..., मातृदेवोभव..., तसि नमन प्रथा। मातृ लालन पालन-प्रत्यक्ष दृष्टान्त। मातृरक्षण उदरान्तु पोषण। हें प्रकृति प्रमाण। हा-परब्रह्म वैभव अनन्त अवर्ण्य-धन्य धन्य धन्य !!!

नाटक गान

आवर्तनॅ - यें तनियावर्तनॅ
संगीतलोकान्तु माधूर्य स्वरॅ
आमंत्रण करतां पावन स्वरान
शोभित जत्ता तें संगीता रूपान (आव...)

स्वरॅ तें गिन्ताक तेजस्व दित्ता
ताळु तो रागाक माधूर्य दित्ता
आनन्दु मेळनु नर्तन करता
शान्ति मेळनु मन्त्र पुष्पित जत्ता (आव...)

प्रफुल्ल जत्ता पवित्र संगीत
श्रवण मनोहर सप्तस्वरान
प्रसिद्धि पांवता श्रेष्ठ संगीत
परमपूर्ण तनियावर्तनॅ (आव...)

नाटक -"तनियावर्तन" (1982)
स्थल - मट्टाञ्चेरी टौन हाळ
अवतरण - GSA कला विभाग, कोच्ची
गानरचना - वी.सुरेश शेणै, कोच्ची
संगीत संविधान अनि
आलापन - आर. मोहनकम्मत, कोच्ची



हरिहर

- कु. अञ्जली किणि, कोच्ची

महादेवु कैलासारि
वैकुण्टान्तु श्री हरि।
मग्न तीं ध्यानान्तु
करताय कल्याण लोकान्तु।।

शंकर म्हण्ता केशव
नारायण शिव शिव
एकमेकालि कोरनु पूजा
एकि जत्ता तंची ऊर्जा।।

ना कोण व्होड ना सान
ह्ये आमी जांका जाण।
श्रीनिवासु करता सृष्टि
संहारा हेतु शिवाली दृष्टि।।

ना तंका आदि न अन्त
दोग्गालीय महिमा अनन्त
कोण म्हण्ता हरि हर
तो पंता संकटा पार।। 



आतां तुमी

- सुनील पालकार, नावशी, गोंय

आतां तुमी सातव्यान बरयत रावात
गुणांक पडसर मुळां झरयत रावात

मान अवमान आयल्यार येवंदी आयकूंक
साहित्याच्या भवसागरात गरयत रावात

सरस्वतीची सासय तशी आसा अगाध
श्रद्धा भक्ती भावान होरायत रावात

सुरांत सुर तुमच्या भरसतले केन्नातरी
मोतयां वरी उतरां पानार देंवयत रावात

साबीत करचे पडटा स्वताक पुरायेन
रोयलेल्यां रोंपल्यांक उदक दियत रावात

कांयनज परमळ फांकलोना तरी भोंवतणी
अनंताचीं गितां अविरत गायत रावात

पेट्टलें होमखण अवश्य एक दीस
ते मेरेन मुंबरांत धुंवरेत रावात

दशावतारवर्णन

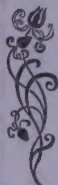
(भामिनि काव्य) - नागेष अण्वेकर, कारवार

श्रीराम

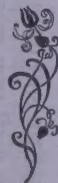
पित्र वाक्या नम्र भावनि
शत्रु रावण लग्गि जयसिलो
भ्रातृ भरताक पादु अपौन राम रघुरामु।
आत्मतायनि राक्लो शबरिक
मित्र मारुति भक्त श्रेष्ठक
अर्थ पूर्णशि राब्ल अन्रिक सर्व लोकांतु।

पावस कसोय येवूंगी

- सोनिया सुभाष शाह, मेरशे, गोंय



पावस असो येता
पावस तसो येता
पावस घसघश्यानी येता
पावस शिर-शिर येता
पावस दडका-दडकानी येता
पावस कसोय येव दी
पावस कसोय पडूं दी
पावस कसोय झडूं दी
ति पावसाची मर्जी....
आनीक जापसालकी
पावस जांवन आसा
ह्या धर्तरेचो राजा
ह्या धर्तरेक भिजयता
फुलयता, फळयता, केळयता
म्हणून आमी जियेंता
पावस असो येवंक जाय
पावस तसो वचुंक जाय
तो अधिकार आमका नां
आमका जाय तसो,
ह्या फुडें पडचोना ....।



पावस ह्या प्रजेचो
जांवन आसा राजा
ताजे नेम - नियम
ह्या फुडे आमका
पाळुक जाय - राखुंक जाय।

भारत अनी आस्ट्रालिया

– सीमन्दिनी शिवानन्द भट,

आस्ट्रालिया आस्ट्रालिया आस्ट्रालिया
अम्मी गेल्लीं थांगा वसन्तकालाक
गाँवु तो सर्व फुल्लून रब्बीले कालाक
हाय ! कित्तुल मनोहर तो गाँवु
'गोड्स ओण कण्ट्री' म्हणु दिसता तो गाँवु।।

सेळवोतान आंग सगळेंच कडकडेता
स्वेटर ग्लौस सोक्स नत्तिल्लें भौंचाक जायना
जल्यारि साधन काँय वायट जायना
वट्टिल्लें पीट तीन दिस्सिंसरि फुल्लून मेळना
होड फ्रिड्जावरी कूळ तो गाँवु।।

अंगा उज्जो ना घाणि ना पोर्टाणि ना
दिसपड्त न्हांव्चे आवश्य ना
दिसपड्त अंवगालें उम्बोळचेंयि आवश्य ना
धूळि ना पुड्डि ना मूँई ना मूसु ना
'गोड्स ओण कण्ट्री' म्हणु दिसता तो गाँवु।।

ब्रम्हाण्डाचें माळ्स अस्सिल्लो तो गाँवु
थांगा मेळनत्तिल्ले साधन कांय तरीना
सोप्पुर कूक, कीर्लु, इत्या सर्व मेळता फ्रोज़न
होळे कुक्काचें सैस-टैप दिकल्यारि अम्मी जत्ता फ्रोज़न

घरां चोंचाक अति सुन्दर मनोहर
प्रत्येक घराचे फिदरान्तु लघु लघु उद्यान
जल्यारि मनीष अस्सिल्ले ना कांय लक्षण
चोंवकूक गेल्यारि वट्टेरि ना जन
कोस्सोलेकु गाँवु तो आस्ट्रालिया।।

मनिषापशि चड अस्स थांगा रूक
दद्दुलेय बायलँय गोरीं अनी चन्द दिक्कूक
कोण कोणाक 'मैन्ड' करनायि थांगा जन
ते खात्तीरि शिंगार्नु भौंचे आवश्य ना
कोस्सोलो विचित्र गाँवु तो आस्ट्रालिया ?।।

अंका भागु घेंव्चाक मूंजि ना व्हर्डीक ना पुंसवन ना
पळ्यां दवरप ना व्रत कोरुक भटमामु ना
देवळ अस्स गणपति अनी शिव विष्णुलें
परन्तु अंगेले देवळा वातावरण ना आराट ना
जायवे अंका तो गाँवु आस्ट्रालिया ?

हांगा ना स्मोक एलाम, सन्डे सेवर अनी फ्यूनरल इन्सोरन्स
हांगाचे रोटारस्स होळ्ळे फोंड अनी ट्राफिक जाम
तेंची देकून आक्सिडेन्ट अनी उल्लौनु घेव्नु मरप
अंगा-उज्जो अस्स, हूमस्स, धूळि अस्स

दिव्य कामधेनु म्हणु दिसता तो गाँवु।।
रोड दिकल्यारि पडन म्हुण दिसता
फोंड ना कोयरु ना ट्राफिक जाम ना
समयारि एकैकडे पाव्नु कयरिं कोरूक जत्ता
तें दिकून अंका समयु डबिळ मेळता
'गोड्स ओण कण्ट्री' म्हणु दिसता तो गाँवु।।

ए र णा कु ळ म

जल्यारि अंका प्रीतीचेकु संस्कारस्स।।
हांगस्स परस्पर मोगु कोर्चीं अंगेलीं जन
हांगस्स अम्मी कोर्का जल्लेले कर्तव्य-कर्म
हांगस्स मनाक सन्तोषु दिंव्चे मस्त आचार
अंका जाय होचि गाँवु हांगाचि अस्स अंचे मूळ
योचि गाँवु अंका 'गोड्स ओण कण्ट्री'।।

औषद पंक्ति - 27

अज्जेलीं वोक्कदा

(मुत्तशिश वैद्यं)

सुशीला टी. भट्, कोच्ची

ञेरिञिला उद्दाक : [ഞെരിഞ്ഞിൽ - भोरनु कंटे जावनु अस्सिल्लें एक सुर्क्कें औषध (Tribulus terrestris)] ह्ये रोगाचे चिकित्सेन्तु बहु प्राधान्य अस्सिल्लें वक्कद तां ञेरिञिल. चार मूठ कड्डून चांग कोरनु धूवन धड्डावनु काडतलीं. तें एक फूट परणे लुगटा कुट्क्यांत काडून चांग कोरनु बन्दूनु ताजी पट्टळी (**കിഴി**) करतली. ती पट्टळी बारा खोल्ले उदकान्तु घालनु चांगु खोतखोतो काडून तें उद्दाक तां रोग्याक पिवंचाक दित्तलीं. दिस्साक पांच स खोल्ले उद्दाक पुणीय पिवोवंका. ही प्रक्रिया मुत फूट जावु भित्तर चालू अस्सुका.

बारली उद्दाक : एक मूठ बारली [यवं, **ബാർലി** / Barley (Hordeum vulgare)] वोरोवु सात-आठ खोल्ले उदकांत सिज्जोवनु निश्शें (उद्दाक) कोरनु दिस्साक चार-पांच खोल्ले दीवप. कळकोय म्हळ्ळेले रोगाक जायतें उद्दाक आवश्य अस्स दिक्कून उंच सांगल्लिं उदकां दित्तची अस्सूका.

12 ज्योतिर्लिङ्ग

1. श्री सोमनाथ
2. श्री मल्लिकार्जुन
3. श्री महाकालेश्वर
4. श्री ओङ्कारेश्वर/ श्री अमलेश्वर
5. श्री केदारनाथ
6. श्री भीमेश्वर
7. श्री विश्वेश्वर
8. श्री त्र्यम्बकेश्वर
9. श्री वैद्यनाथ
10. श्री नागेश्वर
11. श्री सेतुबन्धरामेश्वर
12. श्री घुश्मेश्वर

सुभाषित

माया जी.कम्मत
कोच्ची



"काकदृष्टि बकध्यानं श्वाननिन्द्रा तथैव च।
अल्पाहारं जीर्णवस्त्रं एतद् विद्यार्थि लक्षणं।।"

कायळ्या समान सूक्ष्मदृष्टि, ढोंका समान अचञ्चल श्रद्धा, सूण्या (श्वान) समान नीद, अल्पाहार आनि जीर्णवस्त्र यें पाँच तं विद्यार्थींले लक्षणँ।।



गोय आनी केरळ कोंकणींतलें अंतर

- एन. बालकृष्ण मल्या, कोच्ची

आखिर मेरेन / आखिर पर्यान = अन्त
भित्तेर / अन्त वर्क्यान/ अन्त पर्यान
फाव जालें = प्राप्त जल्लें, मेळलें
नामनेचें = नांव पविल्लें / प्रशस्त
उजवाडावप = प्रकाशन करपृ
सरलो = मरण पावलो, मेल्लो
उरतली = राबतली, आसतली, वरतली
गावपी / गायतलीं = म्हणपी

केरळ-कर्नाटक कोंकणी

- गुरुदत्त एस. प्रभु, कोच्ची

फायि/फल्ले एवीन - फल्ले एत्ता/एन
मोल्या उंचारि - घाटा वयरि
पोटान्तु उण्डाळो अयलो - भीति जल्ली
चड उलैयता - पिर पिरि उलैयता
तेय्या पल्लो/चाये पल्लो - चा पल्लो
तर्जनि/ दक्कोंवचे बोट - चुन्ना बोट
तीनि दुढवाक (प्रयोजनु ना) - तीन कासाक (प्रयोजनु ना)



भक्ति गानामृतं

- के. शान्ता बाई, कोच्ची



नवरात्री माता सरस्वती
विद्यादेवी सरस्वती

ऐश्वर्यरूपिणि सरस्वती
ज्योतिस्वरूपिणि सरस्वती
वीणाधारिणि सरस्वती
पुस्तक धारिणि सरस्वती (नव...)

पद्मभूषिणि सरस्वती
वरप्रदायिनि सरस्वती
रक्षकरूपिणि सरस्वती
आद्य अक्षर रूपिणि सरस्वती (नव...)

अक्षररूपिणि सरस्वती
सर्वाक्षर भाषिणि सरस्वती
अक्षररुपिणि सरस्वती
सर्वाक्षर भाषिणि सरस्वती (नव...)

D.D.9 चन्दना 13, 19, 27 एप्रिल 2014 - एम. एस. कामत्त अनि सांगातीगेंले गीत रामायण कार्यक्रम अस्सिले।

3 (तरा) अग्नि

वैद्युत, जाठर, सौर

गोवा पतळी

बायलाँ खातिर (ददल्यांकय) - पत्मजा कामत, दिल्ली

सामग्री

1. गोवा पिट्टी	-200-250 ग्रां	3. गोड/पेयन्दार	- 100 ग्रां
2. नार्लु	- ½	4. एळा पिट्टो	- ½ चिपट

गोवा पिट्टी उदकान्तु कल्लोवनु रोन्टी (पूरी) पतळावंका। नर्ला सोई अनि गोड/पेयन्दार मेळोवनु चून कोर्का। हन्तु एळा पिट्टो मेळोवंका।

रोन्टियान्तु दोनि-तीन चिपट चून दोव्वोर्नु दोनि कोर्नु मडक कोर्नु कड दम्मूका। पत्तळी पेडावणान्तु दोवोर्नु 15-20 मिनिटांक उक्कोडका।

संज्जे चेर्डुवांकय मलगड्यांकय रुचिकर एक खाण जत्ता। सामग्री, समयु उणे। प्रयत्नूय ऊणे।



सत्यान आस्सिलो न्यायाधीशु



- ए. आर. प्रभु, कोच्ची

एक राज्यान्तु एक रायु समर्गणीन राज्य परिपालन कर्तालो। सग जनाँकयि रय्यालागि वोड्डु बहुमानुय आस्सिलो। दिस उजवाडि राज्य कोट्टाराँ वचात। रात्ति इत्ति करप म्हुण जनपदान रय्यालागि निंगूनीक रय्यान एकि घाँट राज्यांगणांतु लमबेयलि। कोणाकयि कसले रय्यालागि कोळोंका जाल्यारि भायर असिल्ले घाँट वज्जूनु, रय्यालागि वोचून तगेले संकट सांगुयात। ते घँटे दोर जावनु घल्लेले एक वालि त आस्सिलि। एक दिसा एक बहु वर्ष जालोलो घोडो येवनु ती वालि घासु मर्लि। पोटा भुकेन तं घोड्यान वालि घासु मार्लेलि। घासु मारुनिक घाँट वजलि। रय्या आळ येवनु चोंवचानीक एक घोडो त रब्बिला। तो घोडो कोणालो म्हुण सोधून त्या धनियाक रय्यालागि हळ्ळो। ताणे घोड्याक प्रायि जल्लि अनिक घोड्याक काम कोरुक जांना, ते दिक्कून तं अपण्यान घोड्याक भायर घल्लोलो म्हुण रय्या लागि सांगिले। ते समकि न्हय म्हुण सांगिले अनिक चूकि केलेल्याक दामु भोरुकयि, घोड्याक तजो अन्तकालु पर्यान चोंव्का म्हुणूय रय्यान आज्ञा केल्ली।

No	नक्षत्र	നക്ഷത്രം	Astronomical Name
1	अश्विनि	അശ്വതി	Beta Arietis
2	भरणि	ഭരണി	35 Arietis
3	कृत्तिका	കാർത്തിക	Eta Tauri
4	रोहिणि/ ब्रह्मी	രോഹിണി	Aldebaran
5	मृगशिरा/अग्रहायनि	മകയിരം	Lambda Orionis
6	आर्द्रा	തിരുവാതിര/ആതിര	Alpha Orionis
7	पुनर्वसु/ यमका	പുണർതം	Beta Geminorium
8	पुष्या/ सिद्या	പൂയം	Delta Cancri
9	आश्लेषा	ആയില്യം	Alpha Hydroe
10	मघा	മകം	Regulus
11	पूर्वफाल्गुनी/उब्बें	പൂരം	Delta Leonis
12	उत्तरफाल्गुनी/उत्तरें	ഉത്രം	Beta Leonis
13	हस्ता	അത്തം	Delta Corvi
14	चित्रा	ചിത്തിര/ ചിത്ര	Spica Virginis -Vegus
15	स्वाति	ചോതി	Arcturus
16	विशाखा/राधा	വിശാഖം	Alpha Libroe
17	अनुराधा	അനിഴം	Delta Scorpio
18	ज्येष्ठा	തൃക്കേട്ട	Antares
19	मूला	മൂലം	Lambda Scorpio
20	पूर्वाषाढा	പൂരാടം	Delta Sagittari
21	उत्तराषाढा	ഉത്രാടം	Sigma sagittari
22	श्रावण	തിരുവോണം	Alpha Aquiloe
23	श्रविष्ठा/धनिष्ठा	അവിട്ടം	Beta Delphinum
24	शतभिषा	ചതയം	Lambda Aquarius
25	पूर्वभाद्रपदा	പൂരൂരുട്ടാതി	Alpha Pegasi
26	उत्तरभाद्रपदा	ഉത്രട്ടാതി	Gama Pegasi
27	रेवति	രേവതി	Zeta Piscum

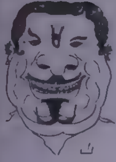
- शैलेष कम्मत.एम., एन. बालकृष्ण मल्या

चन्द्रु अनि नक्षत्रँ

श्रीमद् भागवद् महापुराण (6:6): संगता कसले म्हळ्यारि प्रचेतसाले पूतु जाल्नु अस्सिले दक्षाक अस्किनि म्हळेले बयलेर 60 चेल्लियो जल्लीं म्होणूय, तन्तु 27 चेल्लियांक चन्द्राक व्हर्डीक कोर्नु दिल्ली म्होणूय तँ। तीं 27 चेल्लियो 27 नक्षत्र तँ। चन्द्राक रोहिणीचेरि प्रीति अस्सिलि अनि इतर 26 बयलांक उपेक्षा केल्ला वरीय त अस्सिले। ह्यें जाण जाल्नु दक्षान चन्द्राक क्षयु पंचाक अस्सिल्लो श्रापु दिल्लो....। इतेंय जाओ तंचेरि चन्द्राक चेर्डूंवय जल्लेलि ना।

अभिजित नक्षत्र लगेन अस्सा म्होणूय तें आषाढ अनि श्रावण नक्षत्राँ मद्देंचे तँ म्होणूय श्रुतीन्तु सांगतायि खंय। श्रीमद् भागवतान्तूय एत्ता। तस्सि नक्षत्रँ 28.

रस्पति - आर. के. प्रकाश, पळ्ळूर



Dr. P. N. N. *सिंह*
डॉ. प्रश्नु ना नरसिंह
SSLC, PDC, BSc.,
MBBS (3 times)

शंभु : दिस्साचे हाँव हुम्मेनूच आस्सा। रात्ति प्रश्नु ना। हुम्मेल्नत्तिलें बगेक इत्तें कोरचें डॉक्टर ?

डॉक्टर - प्रश्नु ना, दिस्साचे पूरा तळियेन्तु बुडून पळ्यार हुम्मेल्नत्तिलें राबूयात।

* * * *

परमु : तुमका नत्तिलें मक्का आसा। मक्का नत्तिलें तुमका ना। इत्तें तें डॉक्टर ?

डॉक्टर - प्रश्नु ना, जाल्यारीय सांगता, अस्सल पिश्शें !!!

चेर्डुवांलि चित्रँ





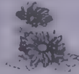
कु. ए. श्रेया (5)
कोच्ची अजोय दयानन्द अनि सिन्धु हांगेली सुपुत्रि।

आळें (കടങ്കഥ / Riddles)

- के. पुरुषोत्तम पै, कोच्ची

एक दोळ्याची ती घरकार्णि एकली
दवर्ल्यारि थंगाचि पोडचि मूं ती।
सुत्तान बन्धून तिका धांवडायल्यारि
धरारि निपूनु हसूनेत्ता।
उपकारु आमका ती करता मस्त
अश्रद्धेन कड्तल्याक चब्बूचि मू ती।
कोण की ती म्हणु संगायि तुम्मि
सांगूचो बालक तो बुद्धिमन्तु1।

सिंवचि सूव



परणी म्हण्णी

- श्रीदेवी सुरेश प्रभु, कोच्ची

- काम काँयिं संगूनक्का
  जेवण खाणाक विस्सोर्नक्का।
- कानु फूँकि म्हळ्यारि
  वान फुँकीता।
- काम केल्यारि दामु अस्स।
- घोड्यारि बेस्सोलो म्होणु
  खूँटु मोडूक नज्ज।
- नॅवे वैद्या पशि पॅर्नो रोगि बॅरो।

ईन्द्रकान्त शेणैले कोंकणी कामान्तु एक प्रधान काम आसा श्रीकृष्णाले जनन थाकून आसीली कालगणना। ह्यें आमी ऊण-ऊणे जाव्नु हांगा अनुवाचकांक परिचयु कोर्नु दित्ताय।

(जनुवरि 2014 अंक थकूनु ....)

आर्य रायाले नांव			शासन कालु वर्ष	मासां	दीस
११.	श्रीमनमहाराजा	भुवनपति	६९	५	५
१२.	"	रणजित	६५	१०	४
१३.	"	ऋक्षक	६४	७	४
१४.	"	सुखदेव	६२	०	२४
१५.	"	नरहरिदेव	५१	१०	२
१६.	"	सुचिरथ	४२	१९	२
१७.	"	सूरसेन(द्वितीय)	५८	१०	८
१८.	"	पर्वतसेन	५५	८	१०
१९.	"	मेधावि	५२	१०	१०
२०	"	सोनचीर	५०	५	२१
२१.	"	भीमदेव	४७	८	२०
२२.	"	नरहरिदेव	४५	१०	२३
२३.	"	पूर्णामल्ल	४४	८	७
२४.	"	करधवि	४४	१०	८

आमी आभारि 



श्रीमद् भगवद्गीता भाषा



कोंकणी अनुवादकु :
इन्द्रकांत वासुदेव शेणै
कोंकणी साहित्य यज्ञ माळा -1 (1981) हंतूली प्रस्तावना

स्मृति-दिवस-चैत्र बहुळ दशमी - *के. अनन्त भट, कोच्ची*

चैत्र बहुळ दशमीचो दीसु हो, कोंकणीक अभिमानाचो
सत्रावे शतमानांतु कोंकणे जनांक स्थानाचो।।प।।

अप्पु भट्, रंग भट्, विनायक पंडित - हे तीन वैद्यजनाक।
आपण्यालें कोंकणी 'प्रमाण-पत्र' तें, आमका प्रयोजनाक।।2।।

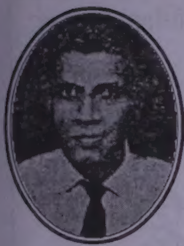
आवय भास त्या तेग वैद्यानी, नागरी लिपीन बरेयली।
देव नागरी कोंकणीक बरी, ही स्थापना करेयली।।3।।

'लिंगुवा ब्राह्माणिका' म्हणु म्हळ्ळां 'ब्राह्मणांगेली भास'।
संगमु भिषाग्वरांगेलो जावनु, सस्यशास्त्राक विकास।।4।।

'होर्तुस इंदिकूस मलबारिकूस' - त्या सस्य ग्रन्थाचें नांव।
प्रतिनिधान परिश्रमान पावलें, प्रसिद्धि सर्वय गांव।।5।।

असले गोश्रीपुराचे वैद्य ते, विश्वचरित्रांतु सरले।
भासेक, देशाक, संस्काराक, आमचें सम्पत् दवरलें।।6।।

भावानूं ! भइणीनूं ! आमकां, तांचो उडगासु करुया।
जीवनांतु तें जनमनांतु तें, सत्याचें तत्व भरुया।।7।।



र. वि. पंडित (06/04/1917 - 23/09/1990)

- एन. बालकृष्ण मल्या, कोच्ची

गोंयांतुले पाळें - शिरदोन (Palem-de-Siridao) गांवांतु विष्णू आत्माराम पंडित आनी रमाबाय हांचो व्हडलो आनी णव संतानातु एकलोचि सुपूत जावनु रघुनाथ विष्णू पंडित हांचो जन्मु जालो. पूणे हांगसर आस्सिल्ले न्यू इंग्लीश स्कूळांतु थकून मेट्रिक्यूलेशन आनी फर्गसनांतु बी.ए. मेरेन शिक्कीलो.

1942 वर्षा भारत छोडो आंदोलनान्तु भागु घेत्तल्लासा. तानीं एक कुशल फोटो काडपी आस्सिल्ले पसावत म्हस्त व्यक्तिचित्रांचे विमोचन केल्लें. 1946क "गोवन कम्यूनिटी संघटने" ची स्थापना केल्ली.

31/03/1948क वेंगुर्लीची (महाराष्ट्र) कु.श्री (सुषमा) गंगाराम अजगांवकार जावून व्हर्डीक जाली.

भयिणीले असमय देहान्ताचे वेळार 23/01/1933 न्तु 'ताई, येशील का कधी परतून ?' म्हूण पयली विलापिका (मराठी कविता) तानीं रचली. 1937 वर्षा इंग्लीश आनी गुजराती भाषेन ह्यी कवितेचे भाषान्तर जावून तांका प्रथम पुरस्कार मेळलो.

हानीं कोंकणी भासेक दिल्लेलें योगदान म्हस्तासा. 'आयलें तशें गायलें', 'उरलें तें रूप धरतलें', 'चन्द्रावळ', 'धरतीचें कवन', 'म्हजें उतर गावड्याचें', 'ल्हारां', 'रेवेंतलीं पावलां', 'नाच रे मोरा', 'मोगाचे आवंडे', 'दर्या गाजोता', 'जीणेचीं रूपडीं', 'रत्नांहार' (भाग 1 आनी 2) आदी पुस्तकान्तु 'दर्या गाजोता' क 1979 वर्षा साहित्य अकादेमीचो पुरस्कारु मेळलो. बालसाहित्याचे खातिर तानीं 'गोडगोड काणयों' (भाग 1 आनि 2). 'रामायण - महाभारतांतल्यो कथा', 'मोगरे फुल्लां', 'भुरग्यांल्यो काणयों', 'भुरग्याल्यें जग' इत्यादी बरेयलें. हिन्दी भाषेन, आंगलेय भाषेन, मराठी भाषेन, कन्नड भाषेन आनी पुर्तुगेज भाषेनय तांची पुस्तकां छापलेलीयासा.

1982 न्तु 'पद्मश्री' न पुरस्कृत केल्लो. 1983 धोर्नु 88 परेन साहित्य अकादेमीचें वांगडी पदाचेर आसिल्ले तानीं 1987-89 गोवा विद्यापीठाचे पयल्याचे अभ्यास मण्डलाचे वांगडी लगेन मेळली. 1990 वर्षा तांका पणजीचे इन्स्टिट्यूट मिनेझीस ब्रागांझ संस्थेचो 'फेलो' फाव जालो. कोंकणी साहित्याचे शिल्पकारांतु एकले ते 73 आयूरि पणजी आसतना हो लोकु सोडून प्रयाण जाले. तांचो उडगासु सगटाले मनांतु सदा अमर आसो.

कयरिं न्हय, रस्पति मात्र!

- गोश्रीपुरं हरिकुमार

मुर्तम आय्कूक एत्तालि एक रस्पति .... बप्पायि पुत्तूयि कोर्नु एक नादस्वर कच्चेरि आय्कतायि।



बप्पाक वाजपा पसून कायिं कळना। चेल्लो सोड्डूक तय्यारीय ना। तवळि बप्पा सांगता -

पेंप्रेकारि निंगीता....



* (वाजिल्यारि) दुड्डु मेळतलेवे ?

धोल्लकारि सांगता...



* मेळतले .... मेळतले ....

ताळु वज्जूचो सांगता...



* संशयु तँ .... संशयु तँ ....

श्रुति धरचो सांगता...



* हूँ ... हूँ ... (रोडुकुळो जाव्नु)

बप्पा पुत्ताले तोण्ड चोय्लो। चेल्लो कायरिं कळ्यावरि रब्बीलो।

Reg. No. KERKON/2012/45527 SPANDAN Registered - No. EKM/732/2012-14
Vol. No. 3 Issue No. 5 Rs. 5/- Published by : KERALA KONKANI ACADEMY, KOCHI 10th May 2014





Printed and published by Suresh A. Shenoi on behalf of Kerala Konkani Academy and Printed at M/s. Prakash Process, Srinivasa Mallan Road, Ernakulam, Kochi - 682 035, Ph : 2350960 and Published at 8/28, Santheri, 1st Floor, Opp. M.S.C. Bank Ltd., Cherlai Road, Kochi - 682002. Editor - Suresh A. Shenoi